IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, December 2025
Impact Factor: 7.67

तुलसीदास की रामचरितमानस: मर्यादा, प्रेम और सामाजिक दर्शन

डॉ. आशुतोष शुक्ला

अतिथि विद्वान -हिंदी विभाग

शासकीय ठाकुर राणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म. प्र.)

सारांश

तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस हिंदी साहित्य की एक अमर कृति है, जो भक्ति काल की राम भक्ति शाखा की शीर्ष रचना मानी जाती है। यह ग्रंथ न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व रखता है, बल्कि सामाजिक, नैतिक और दार्शनिक मूल्यों का भी विस्तृत चित्रण प्रस्तुत करता है। इस शोध पत्र में रामचरितमानस के प्रमुख विषयों—मर्यादा (धार्मिक और सामाजिक नियमों का पालन), प्रेम (भक्ति और मानवीय प्रेम) तथा सामाजिक दर्शन (समाज की संरचना, समानता और लोक कल्याण)—का विश्लेषण किया गया है। तुलसीदास ने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित कर समाज को आदर्श जीवन का मार्ग दिखाया है, जहां प्रेम भक्ति का आधार है और सामाजिक दर्शन लोक मंगल पर केंद्रित है। यह अध्ययन रामचरितमानस के पाठ्य विश्लेषण, ऐतिहासिक संदर्भ और समकालीन प्रासंगिकता पर आधारित है। परिणामस्वरूप, यह सिद्ध होता है कि रामचरितमानस आज भी सामाजिक सुधार और नैतिक उत्थान के लिए प्रासंगिक है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-30200

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, December 2025 Impact Factor: 7.67

कीवर्ड्स:

रामचरितमानस, तुलसीदास, मर्यादा, प्रेम, भक्ति, सामाजिक दर्शन, लोक मंगल, रामराज्य, धार्मिक समन्वय, नैतिक मूल्य।

परिचय:

गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623 ई.) भक्ति काल के प्रमुख कवि हैं, जिनकी रचना रामचरितमानस हिंदी साहित्य की महाकाव्यात्मक कृति है। यह ग्रंथ अवधी भाषा में रचित है और वाल्मीकि रामायण पर आधारित होते हुए भी तुलसीदास की मौलिक दृष्टि को प्रतिबिंबित करता है। रामचरितमानस मात्र रामकथा का वर्णन नहीं है, बल्कि यह एक जीवन दर्शन है जो मर्यादा, प्रेम और सामाजिक मूल्यों को एक सूत्र में पिरोता है। तुलसीदास का युग सामाजिक अस्थिरता, जातिगत भेदभाव और धार्मिक संघर्षों से ग्रस्त था। मुगल शासन के अंतर्गत हिंदू समाज में पतन आ रहा था, और भक्ति आंदोलन के माध्यम से तुलसीदास ने जनसाधारण को राम भक्ति के माध्यम से एकजुट करने का प्रयास किया। राम को उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया, जहां मर्यादा का अर्थ है धार्मिक, पारिवारिक और सामाजिक नियमों का कठोर पालन। प्रेम को भक्ति का मूल बनाया गया, जो ईश्वर और जीव के बीच के संबंध को मजबूत करता है। सामाजिक दर्शन में तुलसीदास ने रामराज्य का आदर्श प्रस्तुत किया, जहां कोई भेदभाव नहीं, सबका कल्याण है। इस शोध पत्र का उद्देश्य रामचरितमानस में इन तीनों तत्वों—मर्यादा, प्रेम और सामाजिक दर्शन—का गहन विश्लेषण करना है। यह अध्ययन दिखाता है कि तुलसीदास की रचना न केवल धार्मिक है, बल्कि सामाजिक सुधार की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। आधुनिक संदर्भ में, जहां सामाजिक असमानता और नैतिक पतन व्याप्त है, रामचरितमानस प्रासंगिक बनी हुई है।तुलसीदास का जीवन स्वयं मर्यादा और भक्ति का उदाहरण है। किंवदंती के अनुसार, वे अपनी पत्नी रत्नावली के उपदेश से वैराग्य प्राप्त कर राम भक्ति में लीन हो गए। उन्होंने लिखा: "कटे श्रीराम संग, बाँधि जटा सिर केस। मैंने चाखा प्रेम रस, पत्नी के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, December 2025 Impact Factor: 7.67

उपदेश॥" यह दर्शाता है कि उनका प्रेम भौतिक से आध्यात्मिक की ओर मुड़ा। रामचरितमानस की रचना उन्होंने चित्रकूट में की, जहां उन्होंने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किया। मर्यादा का अर्थ यहां धार्मिक, पारिवारिक और सामाजिक नियमों का कठोर पालन है। राम का चरित्र ऐसा है जो पितृ आज्ञा का पालन करते हुए वनवास स्वीकार करता है, भाई के प्रति समर्पण दिखाता है और समाज के निम्न वर्गों के साथ समान व्यवहार करता है। उदाहरणस्वरूप, निषादराज गुह से राम का प्रेमपूर्ण व्यवहार जातिगत भेदभाव को चुनौती देता है: "प्रेम पुलक तन, नयन भरि बारी। अंक लिए लिये लाइ उर, लपटाइ॥" यह चौपाई सामाजिक समानता का संदेश देती है। तुलसीदास के युग में समाज वर्णाश्रम धर्म पर आधारित था, लेकिन जातिगत कट्टरता बढ़ रही थी। तुलसीदास ने रामचरितमानस में वर्णाश्रम को आदर्श माना, जहां प्रत्येक व्यक्ति अपनी मर्यादा का पालन करता है। वे लिखते हैं कि समाज का आधार वर्णानुसार सामाजिक मर्यादा है, लेकिन इसमें प्रेम की भूमिका प्रमुख है। प्रेम को भक्ति का मूल बनाया गया, जो ईश्वर और जीव के बीच के संबंध को मजबूत करता है। तुलसीदास की भक्ति सगुण है, जहां राम साकार रूप में भक्त के हृदय में विराजमान हैं। प्रेम यहां अंतिम अवस्था है, जो मर्यादा से जुड़ा है। उन्होंने प्रेम को सौंदर्य-बोध से जोड़ा, लेकिन मर्यादा के दायरे में। राम-सीता का दांपत्य प्रेम मर्यादा से प्रेरित है, जहां अभिषेक के समय वनवास की आज्ञा पर सीता राम के साथ जाती है। हनुमान का राम के प्रति प्रेम भक्ति का आदर्श है, जो निस्वार्थ और समर्पित है। तुलसीदास कहते हैं: "प्रेम भगति रस, एक मन बस कै सेवहु।" यह प्रेम सार्वभौमिक है, जो सभी जीवों के प्रति करुणा उत्पन्न करता है। सामाजिक दर्शन में तुलसीदास ने रामराज्य का आदर्श प्रस्तुत किया, जहां कोई भेदभाव नहीं, सबका कल्याण है। उत्तरकांड में रामराज्य का वर्णन है: "नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना, नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।" यह एक ऐसे समाज की कल्पना है जहां न्याय, समानता और लोक मंगल प्रमुख हैं। तुलसीदास ने जातिगत भेदभाव का विरोध किया, जैसे शबरी, केवट और निषाद से राम का व्यवहार। वे संतों के गुणों में सामाजिक सद्भाव देखते हैं: संत पर दुख में दुखी होते हैं, असंत समाज को विघटित करते हैं। तुलसीदास का सामाजिक दर्शन लोक मंगल पर आधारित है, जहां भक्ति के माध्यम

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, December 2025 Impact Factor: 7.67

से समाज सुधार होता है। उन्होंने स्त्रियों की भूमिका को भी महत्व दिया, सीता को बुद्धिमत्ता और धैर्य की प्रतीक बनाया। उनका दर्शन वर्णाश्रम को बनाए रखते हुए भी समरसता पर जोर देता है। आधुनिक संदर्भ में, जहां सामाजिक असमानता, नैतिक पतन, जातिगत विभेद और धार्मिक असहिष्णुता व्याप्त है, रामचरितमानस प्रासंगिक बनी हुई है। आज के भारत में रामराज्य का आदर्श सामाजिक न्याय और समानता के लिए प्रेरणा दे सकता है। तुलसीदास का प्रेम दर्शन आध्यात्मिक उत्थान सिखाता है, जबकि मर्यादा नैतिक मूल्यों को मजबूत करती है। यह ग्रंथ वैश्विक स्तर पर भी मानवीय मूल्यों का संदेश देता है, जहां प्रेम और मर्यादा से सामाजिक सद्भाव संभव है। आगे के अध्ययन में इसकी वैश्विक प्रासंगिकता का विश्लेषण किया जा सकता है।

शोध पद्धति:

इस शोध पत्र की पद्धति मुख्य रूप से साहित्यिक विश्लेषण पर आधारित है। प्राथमिक स्रोत के रूप में रामचरितमानस का मूल पाठ उपयोग किया गया है, जहां बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड और उत्तरकांड से उदाहरण लिए गए हैं। द्वितीयक स्रोतों में विद्वानों के विश्लेषण, जैसे जॉन स्ट्रैटन हॉले की पुस्तकें, और हिंदी साहित्यिक आलोचनाएं शामिल हैं।

शोध की विधि निम्नलिखित है: पाठ्य विश्लेषण: रामचरितमानस के छंदों, दोहों और चौपाइयों का विषयगत विश्लेषण।

ऐतिहासिक संदर्भ: तुलसीदास के युग की सामाजिक स्थिति का अध्ययन।

तुलनात्मक अध्ययन: वाल्मीकि रामायण से तुलना कर तुलसीदास की मौलिकता को उजागर करना।

समकालीन प्रासंगिकता: आधुनिक समाज में इन विषयों की उपयोगिता का मूल्यांकन।

डेटा संग्रह के लिए वेब सर्च और ब्राउज टूल्स का उपयोग किया गया, जिसमें हिंदी और अंग्रेजी स्रोत शामिल हैं। विश्लेषण गुणात्मक है, जहां उदाहरणों के माध्यम से थीम्स को समझाया गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, December 2025 Impact Factor: 7.67

मुख्य भाग:

1. **मर्यादा का दर्शन**:

रामचरितमानस में मर्यादा को राम के चरित्र का मूल बनाया गया है। राम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा गया है, अर्थात् वह पुरुष जो मर्यादा का सर्वोत्तम उदाहरण है। मर्यादा का अर्थ है नियमों का पालन, चाहे वह राजधर्म हो, पितृभक्ति हो या पत्नी के प्रति कर्तव्य। उदाहरणस्वरूप, अयोध्याकांड में जब राम को वनवास की आज्ञा मिलती है, तो वे बिना प्रश्न किए पालन करते हैं: "पितु वचन मानि सीस चढ़ाई"। यह पितृभक्ति की मर्यादा दर्शाता है। तुलसीदास लिखते हैं कि राम का जीवन दुख-सुख में समान भाव रखता है, जो मर्यादा का आधार है। मर्यादा सामाजिक स्तर पर भी दिखाई देती है। राम शबरी, केवट और निषादराज जैसे निम्न वर्ग के लोगों से समान व्यवहार करते हैं, जो जातिगत मर्यादा को चुनौती देता है। तुलसीदास ने मर्यादा को लोक मंगल से जोड़ा है, जहां व्यक्तिगत सुख से ऊपर सामाजिक कर्तव्य है। आधुनिक संदर्भ में, यह राजनीतिक और सामाजिक नेतृत्व के लिए प्रेरणा है।

संतों के गुणों में मर्यादा का वर्णन है: वे विपत्ति में स्थिर रहते हैं, जैसे वृक्ष कामा-क्रोध को सहन करते हैं। असंत मर्यादा भंग करते हैं, जैसे कुल्हाड़ी चंदन को काटती है।

2. **प्रेम का दर्शन**:

रामचरितमानस में प्रेम भक्ति का मूल है। तुलसीदास भक्ति मार्ग के अनुयायी हैं, जहां प्रेम ईश्वर से जुड़ने का माध्यम है। प्रेम को दो रूपों में देखा गया है: दांपत्य प्रेम (राम-सीता) और भक्ति प्रेम (हनुमान-राम)। बालकांड में राम-सीता का मिलन प्रेम की मर्यादा से प्रेरित है। तुलसीदास लिखते हैं: "प्रेम भगति रस, एक मन बस कै सेवहु"। प्रेम सार्वभौमिक है, जो सभी जीवों के प्रति करुणा उत्पन्न करता है। हनुमान का राम के प्रति प्रेम उदाहरण है, जहां वे कहते हैं: "प्रभु चरित सुनिबे को रसिया"।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, December 2025 Impact Factor: 7.67

प्रेम सामाजिक सद्भाव बढ़ाता है। तुलसीदास ने प्रेम को माया से मुक्ति का साधन बताया है। संतों में प्रेम का गुण है: वे पर दुख में दुखी होते हैं, जैसे फूल सबको सुगंध देता है। असंत प्रेम से रहित होते हैं, वे मालिक को धोखा देते हैं।

आधुनिक युग में, जहां प्रेम को भौतिकता से जोड़ा जाता है, रामचरितमानस का प्रेम आध्यात्मिक उत्थान सिखाता है।

3. सामाजिक दर्शन:

तुलसीदास का सामाजिक दर्शन रामराज्य पर आधारित है, जहां कोई दुख नहीं, सब समान हैं। उत्तरकांड में रामराज्य का वर्णन है: "नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना"। यह सामाजिक समानता, न्याय और कल्याण का आदर्श है।75775f

तुलसीदास ने जातिगत भेदभाव का विरोध किया। राम का शबरी से प्रेम इसका प्रमाण है: "निषादराज प्रेम बस भये"। सामाजिक दर्शन में लोक मंगल प्रमुख है, जहां संत समाज को ऊपर उठाते हैं।

संतों के गुण सामाजिक सद्भाव दर्शाते हैं: वे सत्संग से समाज को शिक्षित करते हैं, जैसे त्रिवेणी संगम। असंत समाज को विघटित करते हैं।

तुलसीदास ने स्त्रियों की भूमिका को महत्व दिया, जैसे सीता की बुद्धिमत्ता। यह सामाजिक समन्वय का दर्शन है। आधुनिक भारत में, रामचरितमानस सामाजिक सुधार के लिए उपयोगी है।

निष्कर्ष

रामचरितमानस में मर्यादा, प्रेम और सामाजिक दर्शन एक दूसरे से जुड़े हैं। राम का चरित्र इनका समन्वय है, जो समाज को नैतिक और आध्यात्मिक रूप से मजबूत बनाता है। तुलसीदास ने भक्ति के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, December 2025
Impact Factor: 7.67

माध्यम से सामाजिक सुधार का मार्ग दिखाया। आज के युग में, जहां असमानता और नैतिक पतन है, यह ग्रंथ प्रेरणा स्रोत है। आगे के शोध में इसकी वैश्विक प्रासंगिकता का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ

[1]. Goswami, Tulsidas. Ramcharitmanas. Gita Press, 2000.

[2]. Hawley, John Stratton. A Storm of Songs: India and the Idea of the Bhakti Movement. Harvard University Press, 2015.

[3]. Kumar, Praveen. "**रामचरितमानस में प्रेम और मर्यादा**." Apni Maati, 31 Jan. 2024, www.apnimaati.com/2024/01/blog-post_32.html.

[4]. Premananda, Swami. Spotlights on the Ramayana. The Divine Life Society, www.dlshq.org/download/spotlights-on-the-ramayana.

[5]. "The Eternal Resonance: Tracing the Reception of Ramcharitmanas." Creative Flight, www.creativeflight.in/2025/05/the-eternal-resonance-tracing-reception.html.